एनएसआई छात्रों को ऑलराउंडर बना रहा

तेंदुए पर नजर रखने के लिए संस्थान ने हाई रेजोल्यूशन के कैमरे लगाए

ब्रैंडिलाइव

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विभिन्न अंतरालों पर तेंदुआ देखे जाने की खबरों के बीच पर्याप्त एहतियाती कदम उठाते हुए संस्थान के कामकाज को प्रभावी ढंग से संचालित किया जा रहा है। संस्थान पहले ही उच्च विभेदन (हाई रेसोलूशन) कैमरे, फ्लड लाइट और सुरक्षा कर्मियों की व्यापक तैनाती कर चुका है।
गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों को व्यावहारिक अनुभव देने के लिए, गन्ने की विभिन्न किस्मों छ्श 15023, छ्शस्क्ष 14201 और छ्शरु 13235 आदि के रोपण की प्रक्रिया चालू की गयी। छात्रों को उच्च उत्पादकता वाली गन्ने की प्रमुख किस्मों के बारे में, रोपण की नवीन तकनीकों जैसे, ट्रेंच रोपण (नाली मे बुवाई) और एकल कली (सिंगल बड) आदि और मैक्रो और माइक्रो पोषक तत्वों के प्रबंधन पर व्यापक व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी।
जबकि हम उन्हें सिंगल बड तकनीक के द्वारा गन्ने की बुवाई के बारे में जानकारी दे रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रति हेक्टेयर कम बीज की आवश्यकता होती है, वे सिंचाई के पानी की आवश्यकता को कम करने के लिए फरो सिंचाई और सूक्ष्म सिंचाई के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि गन्ने को पानी की गहन फसल माना जाता है, डॉ अशोक कुमार, कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर ने कहा। छात्रों को इस व्यावहारिक ज्ञान देने मे ड्ढ लोकेश बाबर, वैज्ञानिक अधिकारी की विशेष भूमिका है 7 निदेशक नरेन्द्र मोहन ने कहा, फ्रदेखना ही विश्वास हैफ्र और अपने हाथों से करने से विषय की बेहतर अंतर्दृष्टि मिलेगी, जिससे छात्रों में बेहतर ज्ञान और आत्मविश्वास पैदा होगा। यही कारण है कि हमने तय किया कि बीज शोधन से लेकर रोपण और सिंचाई तक सभी गतिविधियां छात्रों द्वारा ही की जानी चाहिए। इसके अलावा, स्वस्थ फसल के लिए स्वस्थ बीज महत्वपूर्ण है और इस प्रकार उन्हें बीज उपचार की विभिन्न तकनीकों, पारंपरिक रासायनिक उपचार के अलावा गर्म पानी और गर्म हवा के द्वारा उपचार से भी अवगत कराया जा रहा है, उन्होंने कहा।
नरेंद्र मोहन, निदेशक, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान सभी से अपील करते हैं कि संस्थान परिसर में तेंदुए के बारे में सोशल मीडिया पर फैलाए जा रहे विभिन्न वीडियो और समाचारों की सत्यता की जांच करने के उपरांत ही आगे भेजें क्योंकि उनमें से कई को सही नहीं पाया गया है। उन्होंने कहा कि यह अनावश्यक रूप से संस्थान के कर्मचारियों में भ्रम और दहशत पैदा करता है।

एनएसआई के छात्रों ने सीखी गन्ना रोपण प्रक्रिया

❑ बीज शोधन से लेकर रोपण व सिंचाई की दी जानकारियां-निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन

कानपुर, 6 नवम्बर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों को व्यावहारिक अनुभव देने के लिए गन्ने की विभिन्न किस्मो आदि के रोपण की प्रक्रिया चालू की गई। छात्रों को उज्ज उत्पादकता वाली गन्ने की प्रमुख किस्मो के बारे में रोपण की नवीन तनकीकों जैसे ट्रेंच रोपण (नाली में बुवाई) और एकल कली (सिंगल बड़) आदि और मैक्रो और माइक्रो पोषक के प्रबंधन पर व्यापक व्याहारिक जानकारी दी जाएगी। जबकि हम उन्हे सिंग बड तकनीक के द्वारा गन्ने की बुवाई के बारे में जानकारी दे रहे है। जिसके परिणाम स्वरूप प्रति हेक्टेयर कम बीज की आवश्यकता होती है। वे सिंचाई के पानी की आवश्यकता को कम करने केलिए फरो सिचाई और सूक्ष्म सिचाई के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर रहे है। क्योंकि गन्ने को पानी की गहन फसल माना जाता है। सहायक प्रो. डा. अशोक कुमार ने कहाकि छात्रों को व्यावहारिक ज्ञान देने में अधिकारी डा. लोकेश बाबर ने विशेष भूमिका निभाई है। एनएसआई कानपुर, निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने कहाकि देखना ही विश्वास है और अपने हाथो से करने से विषय की बेहतर अंतदृष्टि मिलेगी, जिससे छात्रों में बेहतर ज्ञान और आत्म विश्वास पैदा होगा। यह कारण है कि हमने तय किया है कि बीज शोधन से लेकर रोपण और सिंचाई तक सभी गतिविधियों छात्रों द्वारा ही की जानी चाहिए। इसके अलावा स्वस्थ फसल के लिए बीज महत्वपूर्ण है और इस प्रकार उन्हे बीज उपचार की विभिन्न तकनीको, पारंपरिक रासायनिक उपचार के अलावा गर्म पानी और गर्म हवा के द्वारा उपचार से भी अवगत कराया जा रहा है।

गन्ने की बुआई करते छात्र।

छात्र छात्राएं सोशल मीडिया में न फैलाएं गलत अफवाह: नरेंद्र मोहन

शुगर इंस्टिट्यूट में तेंदुआ आ जाने से सतर्क हुआ प्रशासन

नगराज दर्पण समाचार

कानपुर । राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विभिन्न अंतरालों पर तेंदुआ देखे जाने की खबरों के बीच पर्याप्त एहतियाती कदम उठाते हुए संस्थान के कामकाज को प्रभावी ढंग से संचालित किया जा रहा है। संस्थान पहले ही उच्च विभेदन (हाई रेसोलूशन) कैमरे, फ्लड लाइट और सुरक्षा कर्मियों की व्यापक तैनाती कर चुका है।गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रम के छात्रों को व्यावहारिक अनुभव देने के लिए, गन्ने की विभिन्न के रोपण की छात्रों को उच्च उत्पादकता वाली गन्ने की प्रमुख किस्मों के बारे में, रोपण की नवीन तकनीकों जैसे, ट्रेंच रोपण (नाली में बुवाई) और एकल कली (सिंगल बड) आदि और मैक्रो और माइक्रो पोषक तत्वों के प्रबंधन पर व्यापक व्यावहारिक जानकारी दी जाएगी। जबकि हम उन्हें सिंगल बड तकनीक के द्वारा गन्ने की बुवाई के बारे में जानकारी दे रहे हैं जिसके परिणामस्वरूप प्रति हेक्टेयर कम बीज की आवश्यकता होती है, वे सिंचाई के पानी की आवश्यकता को कम करने के लिए फ़रो सिंचाई और सूक्ष्म सिंचाई के बारे में भी जानकारी प्राप्त कर रहे हैं क्योंकि गन्ने को पानी की गहन फसल माना जाता है।डॉ अशोक कुमार, कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर ने कहा छात्रों को इस व्यावहारिक ज्ञान देने मे डा लोकेश बाबर, वैज्ञानिक अधिकारी की विशेष भूमिका है।निदेशक नरेन्द्र मोहन ने कहा, देखना ही विश्वास है और अपने हाथों से करने से विषय की बेहतर अंतर्दृष्टि मिलेगी, जिससे छात्रों में बेहतर ज्ञान और आत्मविश्वास पैदा होगा। यही कारण है कि हमने तय किया कि बीज शोधन से लेकर रोपण और सिंचाई तक सभी गतिविधियां छात्रों द्वारा ही की जानी चाहिए। इसके अलावा, स्वस्थ फसल के लिए स्वस्थ बीज महत्वपूर्ण है और इस प्रकार उन्हें बीज उपचार की विभिन्न तकनीकों, पारंपरिक रासायनिक उपचार के अलावा गर्म पानी और गर्म हवा के द्वारा उपचार से भी अवगत कराया जा रहा है । निदेशक नरेंद्र मोहन ने सभी से अपील करते हैं कि संस्थान परिसर में तेंदुए के बारे में सोशल मीडिया पर फैलाए जा रहे विभिन्न वीडियो और समाचारों की सत्यता की जांच करने के उपरांत ही आगे भेजें क्योंकि उनमें से कई को सही नहीं पाया गया है। उन्होंने कहा कि यह अनावश्यक रूप से संस्थान के कर्मचारियों में भ्रम और दहशत पै[illegible]।

Various sugarcane varieties planted to give exposure to students

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

For giving practical exposure to students of Post Graduate Diploma Course in Sugarcane Productivity and Maturity Management, planting of different varieties of sugarcane, Co 15023, CoLk 14201 and CoS 13235 etc. has been taken up. The students shall be given a comprehensive practical exposure about prominent sugarcane varieties giving higher productivity, innovative techniques of planting viz. trench planting and single bud etc. and on management of macro and micro nutrients. "While we are giving them exposure about single bud technique which results in lower seed requirement per hectare, they are also going to get idea about furrow irrigation and micro-irrigation to reduce requirement of irrigation water as sugarcane is considered as water intensive crop", said Dr Ashok Kumar, Assistant Professor of Agriculture Chemistry. "Seeing is believing" and by doing with own hands is going to give better insight which will result in better knowledge and built of confidence in the students, said Director Narendra Mohan. "This is the reason we have decided that all activities from seed treatment to planting to irrigation should be done by students only. Further, healthy seed is important for healthy crop and thus they are also being exposed on various techniques of seed treatment viz. hot water and hot air etc. besides the conventional chemical treatment", he added.

Meanwhile, amidst reports of leopard being seen at various intervals at National Sugar Institute (NSI) its working is being managed effectively taking adequate precautionary measures. The institute has already gone ahead with installation of high resolution cameras, flood lights and extensive deployment of security personnel. Director Narendra Mohan also appealed to all to check the veracity of various videos and news being circulated on social media about leopard in the institute campus as many of them have been observed as fake. It unnecessarily creates confusion and panic amongst the institute employees, he said.

शर्करा संस्थान छात्रों को कराया गन्ना बोने का व्यावहारिक अनुभव

छात्रों को कराया जा रहा गन्ना की बुवाई का व्यावहारिक अनुभव।

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के गन्ना उत्पादकता और परिपक्वता में स्नातकोत्तर डिप्लोमा पाठ्यक्रमों के छात्रों को व्यावहारिक अनुभव दिलाने के लिए रविवार को गन्ने की विभिन्न किस्मों की रोपण प्रक्रिया को संस्थान फार्म हाउस पर चालू कराया गया। कार्यक्रम के तहत छात्रों को उच्च उत्पादकता वाली गन्ने की प्रमुख किस्में, रोपण की नवीन तकनीकों जैसे ट्रेंच रोपण (नाली में बुवाई) और एकल कली (सिंगल बड) आदि और मैक्रो और माइक्रो पोषक तत्वों के प्रयोग पर विस्तृत जानकारी दी जाएगी।

संस्थान के कृषि रसायन विज्ञान के सहायक प्रोफेसर डॉ. अशोक कुमार ने छात्रों को बताया कि सिंगल बड तकनीक द्वारा गन्ने की बुवाई के परिणामस्वरूप प्रति हेक्टेयर कम बीज की आवश्यकता होती है। ड्रिप सिंचाई व सूक्ष्म सिंचाई से सिंचाई के पानी की आवश्यकता भी कम की जा सकती है। निदेशक नरेंद्र मोहन ने कहा कि छात्रों को अपने हाथों से रोपण करने से विषय की विशेष अंतर्दृष्टि मिलेगी। इसलिए हमने तय किया है कि जोतने से लेकर रोपण और सिंचाई तक सभी गतिविधियां छात्रों द्वारा ही की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि स्वस्थ फसल के लिए स्वस्थ बीज महत्वपूर्ण हैं। इसलिए उन्हें बीज उपचार की विभिन्न तकनीकों, पारंपरिक रासायनिक उपचार के अलावा गर्म पानी व गर्म हवा के द्वारा उपचार से भी अवगत कराया जा रहा है।

'तेंदुए को लेकर भ्रम न फैलाएं लोग'

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने संस्थान कार्य क्षेत्र में तेंदुए की गतिविधियों देखे जाने के संबंध में अवगत कराया है। उन्होंने कहा कि संस्थान परिसर में तेंदुए के बारे में सोशल मीडिया पर फैलाये जा रहे विभिन्न वीडियो व जानकारी की प्रामाणिकता की जांच के उपरांत ही माने जैसे, क्योंकि अभी तक ऐसा कोई भी प्रमाण नहीं पाया गया है। उन्होंने कहा कि यह अनावश्यक रूप से संस्थान कर्मियों में भय और तनाव पैदा करता है। उन्होंने कहा कि संस्थान में तेंदुए देखे जाने की खबरों के बीच पर्याप्त एहतियाती कदम उठाते हुए सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किया जा रहा है। संस्थान पहले ही उत्तर प्रदेश (वाइल्डलाइफ) विभाग, वन विभाग और सुरक्षा कर्मियों को आवश्यक निर्देश जारी कर चुकी है।